



(1936-2009)

ध्यान पत्रिका

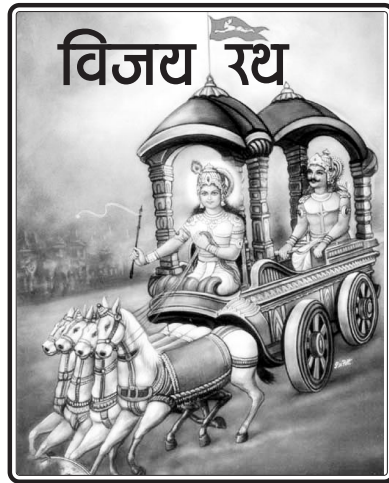
प्रेरक : डॉ० रामभू नाथ

M.Sc., Ph.D.

वर्ष-21

अगस्त-2011

अंक-8



भगवान ने हमें जीवन को सरलता से जीने के लिए गीता के रूप में ज्ञान का मंत्र दिया। इसके द्वारा जीवन की जटिलताओं का उत्तर आसानी से प्राप्त होता है।

प्रकाशक

ध्यान सत्संग सभा

हिसार (हरियाणा), मो. : 09416164702, 09416041346

जीवन : जीने की कला

श्री रवि प्रकाश कौशिक (9467297254)

मथुरा भावें द्वारिका, भावें जा जगन्नाथ।

साध संगति हरि भजन बिनु: कछु न आवै हाथ॥

सुमिरन ऐसा कीजिए, खरे निशाने चोट।

मन ईश्वर में लीन हो: हिले ना जिहवा होठ॥

मरा मरा सब कहें, मरना ना जाने कोए।

मरना ऐसा मरिए: मरना फिर ना होए॥

गजब तूने गजब किया, माथे बांधा मोर।

आया था हरि भजन को: चला नरक की ओर॥

लक्ष्य ना ओझल होने पाए, कदम मिला कर चल।

सफलता तेरे चरण चूमेगी, आज नहीं तो कल॥

फूलों में जो स्थान सुगन्ध का है, फलों में जो स्थान मिठास का है, भोजन में जो स्थान स्वाद का है, माँ के दिल में जो स्थान ममता का है: ठीक वही स्थान जीवन में चरित्र का है। अध्यात्म से पुरुष उच्च संकल्पों द्वारा: संयमी, श्रमी, अहिंसक, सदाचारी, प्रेमी बन जाता है। इसलिए चरित्रवान बनने के लिए समय की महानता के रहस्य को समझ कर कुछ समय श्रद्धा एवं प्रेमपूर्वक निरन्तर सर्वश्रेष्ठ परमात्मा के ध्यान में ही लगाएं। अखण्ड चेतना की इच्छानुसार प्रकृति हम सबको सुखी बनाना चाहती है। यदि प्रकृति का वश चले तो संसार में कोई दुःखी हो ही नहीं सकता।

क्या है दुःखों का कारण ?

रजोगुण और तमोगुण : दोनों रावण रूपी आसुरी शक्तियां हैं।

सत्त : जो सुख देने वाली शक्ति है, इनके विरोध में रहती है। यदि खंडित चेतना क्रियाओं के क्षेत्र में प्रवेश करती हैं: तो रज और तम उतपन्न हो जाते हैं। चेतना का सुखी या दुखी होना: इन गुणों के अनुपात पर निर्भर है। सुखी चेतनाएं वायुमण्डल में सुख पहुंचाती हैं और दुखी चेतनाएं

वायुमंडल में दुख फैलाती हैं। केवल मनुष्य योनि ही एक ऐसी योनि है: जो कर्म (Meditation) द्वारा सत्त का फैलाव कर सके।

मनुष्य में एक ऐसी शक्ति विद्यमान है कि वह ऐसा कर्म कर सके: जिसके आधार पर आत्मिक शक्ति को भावातीत क्षेत्र से क्रियाओं के क्षेत्र में ला सके। पशु अपनी इच्छानुसार किसी भी क्रिया या कर्म द्वारा आत्मिक शक्ति को जीवन में प्रकट नहीं कर सकते। मनुष्य का स्नायु संस्थान (Nervous System) इतना उच्च है कि मनुष्य जब चाहे: कुछ कर्म (Meditation) द्वारा आत्मिक शक्ति को अपने जीवन में प्रगट कर सकता है। जितनी आत्मिक शक्ति चाहे: उतनी प्रकट कर सकता है। ऐसे कार्यों को ही निष्काम कर्म कहते हैं और इस कर्म (मन द्वारा) को ही ईश्वर का ध्यान कहते हैं। यह ही उपासना = (उप+आसन) अथवा सत्संग = (सत्+संग) है। □

हम दुःखी और परेशान क्यों ?

❧ श्रीमती सुमन पाहूजा

“जो पिंडे सो ब्रह्माण्डे”

यदि आप ध्यान साधना द्वारा अपने में ईश्वर की शक्ति प्रकट करके सुखी एवं शान्त हो जाएं: तो यह सारा संसार तुम्हें स्वयंएव स्वर्ग जैसा प्रतीत होगा। अष्टावक्र गीता (1.4) के अनुसार :-

यदि देह पृथक्कृत्य चिति विश्राम्य तिष्ठसि।

अधुनैव सुखी शान्तः बन्धमुक्तो भविष्यति॥

हे जनक! यदि तुम शरीर को पृथक् करके तथा चैतन्य आत्मा में विश्रामपूर्वक स्थित हो: तो तुम अभी ही सुखी, शान्त तथा बन्धन मुक्त हो जाओगे।

जागते समय एक दिन में 15-20 घंटे संस्कार पड़ते रहते हैं और अन्दर समाते रहते हैं। वे संस्कार दिन में केवल आधा-आधा घंटा बैठने से कैसे दूर होंगे ?

हमारे घर में 24 घंटे अपने आप थोड़ी-थोड़ी धूल भरती रहती है। उसे हम सवेरे-शाम आधा-आधा घंटा झाड़ू लगा कर साफ कर देते हैं। ऐसे ही सुबह-शाम इस मन मन्दिर में झाड़ू रोज़ लगाया जाए: तो आप स्वयंएव शांत चित्त हो जाएंगे और अपने आप को अत्यंत सुखी अनुभव करेंगे।

मन मन्दिर में गाफ़िला, झाड़ू रोज़ लगाया कर

बैठ अकेला दो घड़ी: ईश्वर को तू ध्याया कर। टेक।
मन मन्दिर में गाफ़िला, झाड़ू रोज़ लगाया कर ॥1॥

सोने में तूने रात गुजारी: दिन भर करता पाप रहा,
इसी तरह बर्बाद तू बन्दे, करता अपना आप रहा।
तैयार होकर, ध्यान सत्संग में: नित तू जाया कर ॥2॥

बार-बार मानुष तन पाना: बच्चों का कोई खेल नहीं,
जन्म-जन्म के शुभ कर्मों का, जब तक होता मेल नहीं।
नर तन पाने के लिए, उत्तम कर्म कमाया कर ॥3॥

पास तेरे जो दुखिया कोई: तूने मौज उड़ाई क्या,
भूखा प्यासा पड़ा पड़ौसी, तूने रोटी खाई क्या।
पहले सबसे पूछकर, फिर तू भोजन किया कर ॥4॥

देख दया उस परमेश्वर की: जिसने उत्तम जन्म दिया,
सोच जरा तू मन में प्राणी, कितना है उपकार किया।
प्रातः उठकर हे प्राणी! उसका शुक्र मनाया कर ॥5॥

❧ ❧ ❧

स्वार्थ और निस्वार्थ



(1936-2009)

✍ डॉ० शम्भूनाथ

यदि हम स्वार्थ का सन्धि-विच्छेद करें तो हम पाते हैं :
स्व+अर्थ। स्व का मतलब होता है अपना और अर्थ का
मतलब है धन।

अपना धन का अर्थ होता है: मन का धन।

सभी का मन सुख का भूखा है। इसलिए जिस प्रकार एक पेट के भूखे मनुष्य को खाने की आवश्यकता महसूस होती है, उसी प्रकार हर जीवित प्राणी को अपने मन के सुख की भूख मिटाने (इच्छाओं की पूर्ति) की आवश्यकता महसूस होती है। मन की इस भूख को मिटाना ही: जीवन का लक्ष्य है।

**जहां जीवन है: वहां सुख की भूख मिटाने के लिए सुख चाहिए।
मात्र यही सत्य सृष्टि के सारे प्राणियों के जीवन का आधार है।**

जिस प्रकार से पानी दो तरह का होता है। समुद्र का खारा पानी और गंगा, यमुना जैसी नदियों का मीठा पानी। सुख भी दो तरह का होता है :-

1. एक बाहर की वस्तुओं का सुख: जिसे मन इन्द्रियों द्वारा सम्पर्क करने की अनुभूति के रूप में प्राप्त करता है।

2. दूसरा ब्रह्म के तत्व का सुख: जिसे मन स्वयं बिना किसी इन्द्रिय की मदद के सम्पर्क करके प्राप्त करता है।

पहले प्रकार के सुख को सुख (Pleasure) और दूसरे प्रकार के सुख को आनन्द (Bliss) कहते हैं। समुद्र का पानी प्यास नहीं मिटाता केवल प्यास की तड़पन को बढ़ाता है। प्यास को तृप्त करने की क्षमता केवल गंगा-यमुना, जैसी नदियों के पानी में है। इसी प्रकार से :-

**सुख केवल सुख की तड़पन बढ़ाता है
और आनन्द सुख की भूख मिटाता है।**

सुख मात्र उन्हीं चीज़ों का है: जो यथार्थ में हैं। चाहे वे बाहर की दुनियां के हों अथवा अन्दर की दुनियां के।

अन्दर का सत्य बाहर के सत्तों का मूल आधार है :-

**कस्तूरी कुण्डल बसे, मृग ढूँढे बन माहिं।
ऐसे घट-घट में राम हैं: दुनियां देखे नाहिं॥**

राम आनन्द के प्रतीक हैं-सुख की भूख मिटाने में सभी का जीवन व्यस्त है। जो नहीं जानता: वह मात्र बाहर के सुखों के पीछे दौड़कर उसको प्राप्त करने की कोशिश में अपना जीवन नष्ट कर देता है। कहा जाता है कि वह माया के दलदल में फंसा हुआ है। जो भी माया के दलदल में फंसा हुआ है: उसको गलतफहमी केवल इतनी है कि जिन सुखों के माध्यम से वह अपना जीवन सुखी बनाना चाहता है: वे सुख तो केवल सुख की तड़पन बढ़ाते हैं, सुख की भूख नहीं मिटाते। वे गलतफहमी वश कुछ गलत रास्तों पर चलकर समझते हैं: कि उन्हें सही रास्ता मिल गया है। ऐसे लोग आनन्द उभारने का रास्ता पाने की कमी में: मात्र सुख छोड़ने और दुःख अपनाने का रास्ता अपना लेते हैं। लेकिन लेखक यह कहना चाहता है कि जब तक आनन्द उभारने का रास्ता नहीं मिलता: ऊपर बताए हुए रास्ते हमेशा ही दुःख मिटाने में असफल रहेंगे, क्योंकि दुःख अपनाने और सुख छोड़ने वाला व्यक्ति भी हमेशा द्वैत के क्षेत्र में ही हाथ-पैर मार रहा है। **दुःख से परे जाने के लिए तो केवल एक ही मार्ग है: और वह द्वैत क्षेत्र में अद्वैत के प्रभाव को बढ़ाने का मार्ग: अर्थात् आनन्द उभारने का मार्ग है।**

जहाँ योगेश्वर कृष्ण हैं, पार्थ धनुर्धर साथ।

विजय, नीति और श्री वहाँ, निश्चय करें निवास॥

स्वार्थ पूरा करना ही: जीवन का लक्ष्य

स्वार्थ: केवल आनन्द के उभारने के मार्ग पर पूरा होगा। निष्क्रियता (Meditation) द्वारा आनन्द उभारने का एक मार्ग हम साधकों के बीच है। इस मार्ग पर हम उस समय ही चल रहे होते हैं: जिस समय हमारे जीवन में प्रयास हटा रहता है। इसे यों भी कह सकते हैं कि जिस समय बुद्धि क्रियाशील नहीं रहती: उसी समय आनन्द उभरता है। मन में ब्रह्मतत्त्व के दो गुण: चित् और आनन्द उभरने लगते हैं। चित्त का उभरना या चेतना का विकास: एक ही बात है। जब हमें चेतना बढ़ाने का रास्ता मिलता है: तब धीरे-धीरे हमारे अन्दर भावातीत जगत की महसूसियत पैदा होती है और इस महसूस करने की शक्ति को ही भावातीत चेतना कहते हैं। यह स्वाभाविक है कि जब यह चेतना काफी बढ़ जाती है: तब मनुष्य को दूसरों को सुख देने में यह नहीं लगता कि उसके सुख में कुछ कमी हो जाएगी। और जब वह चेतना पूर्ण रूप से जागृत हो जाती है: तब उपर्युक्त डर की कोई संभावना ही नहीं रहती। **इस अवस्था तक पहुंचने पर व्यक्ति निःस्वार्थ हो जाता है।** आज के समाज के अधिकांश मनुष्य यह समझते हैं कि निःस्वार्थ शब्द शायद स्वार्थ शब्द का विलोम (Opposite) है, लेकिन हमने देखा कि **स्वार्थ और निःस्वार्थ दोनों की दो अलग-अलग अवस्थाएं हैं। इन अवस्थाओं का सम्बन्ध मन का बाहर और भीतर की दुनिया में विचरण से है: या यह कहें कि स्थूल और सूक्ष्म दुनिया में विचरण से है। ये दोनों जगत विपरीत दिशाओं में हैं।** यही कारण है कि चेतना के विकास की कमी में ये लोगों को एक-दूसरे के विपरीत यानी विलोम (Opposite) लगते हैं: लेकिन सत्य यही है कि ये मन की दो विपरीत अवस्थाएं हैं। जब मन निःस्वार्थ हो जाता है: तब इस अवस्था में उसके अन्दर सुख का स्वार्थ खत्म हो जाता है, लेकिन आनन्द का स्वार्थ नहीं खत्म होता। यदि सुख का स्वार्थ रहता

भी है: तो भी यह असम्भव हो जाता है कि वह क्षण भर के लिए भी इस बात को भूल जाये कि बाहर की समस्याओं और सुखों को प्रदान करने वाला केवल आनन्द ही है। ऐसी अवस्था में वह बहुत तीव्रता के साथ आनन्द को बढ़ाने में लग जाता है, जिससे मन की इतनी बड़ी-बड़ी इच्छाएं भी पूरी हो जाएं: जिनकी पूर्ति आनन्द की कमी में मात्र परियों की कहानी जैसी होती है। धीरे-धीरे उसकी आगे की शेष तीनों चेतनाओं: ब्राह्मी चेतना (Cosmic Consciousness), ईश्वरीय चेतना (God Consciousness) और अद्वैत चेतना (Unity Consciousness) का विकास होता है। इस तरह हम देखते हैं कि मन का निःस्वार्थ होना, मन की अवस्था है: जहां से उच्च स्तर की चेतनाओं का विकास होता है। □

SHRI SATHYA SAI BABA

An Interview on his 55th Birthday dated 23.11.1980

by Sh. Raj Chengappa, Editor-in-chief

Essence from The Tribune dated 29.4.2011



23-11-1926
24-04-2011

What would happen to you after your death ?

"Life and death are only for a body. I am not a body." Pointing to his handkerchief, he added: "It (my body) is like my handkerchief. It is mine. Yet I am separate from it. I will be reincarnated when I die."

He didn't focus on any particular religion but espoused that the ultimate goal of all religions was the same: the self-realisation and oneness with the divine.

On India : "We have politicians without principles. They are useless and dangerous. Politicians are interested in power and not in

helping people. They are narrow-minded. Expanse is life. Contraction is death. They must expand". He then added with a smile: "On platforms all politicians are heroes but practically they are zeroes."

On his miracles : "My biggest miracle is love. The rest is chhotta. Just like in jalebis, burfis, rasgullas and other sweets : the common ingredient is sugar; so also love is the common ingredient in our lives. Be the embodiment of love. That is the way to peace."

On mental peace : "Mental peace is not outward. You cannot buy it from shops or make it an industry like a commodity. It is within you. See my handkerchief. You will say it is handkerchief but it is really cloth. The cloth is made from threads and the threads from cotton. Thoughts are threads: desires; cotton and the mind is the product. If the former are interwoven properly: the mind will not tear easily. It will be a whole and at peace."

On himself : "My heart is free from trouble and worries. My hands are for society. My head is forest (he laughed gleefully pointing to his mop of curly hair): I meant for rest." चैतन्य आत्मा में विश्रामपूर्वक स्थित।

Then by telling the high and mighty to do menial tasks in the ashram, he was working on cutting out their ego. By helping his devotees solve their problems, which many attributed to his miraculous powers: he was giving them the faith to believe in a force; higher than themselves on the path towards self-realisation. □

मुक्ति पथ

(सन्यासी गीता)

अर्जुन तुझ को मैं कहूँ, गुप्त एक यह बात।
समझ ज्ञान विज्ञान को, ले मुक्ति विख्यात॥
यह सारा ब्रह्माण्ड जो, मुझ से स्थिर जान।
संग किसी के मैं नहीं, तू निरलेप पिछान॥
जैसे पवन आकाश में: विचरत है सब वार।
तैसे ही ये जीव सब: फिरत जान निर्धार॥
प्रलय काल में प्राणी जगत, मेरे में हों लीन।
आद कल्प जब फिर चले, फिर मैं रचना कीन॥
अविनाशी मोहे जानकर, मुझ में चित्त लगाओ।
ज्ञानि पुरुष ध्यावे मुझे, स्तुति मेरी ही गाओ॥
सारे जगत की गति मोहे जानो, कर्तार्थार्ता पोषक मानो।
मातपिता मित्र हूँ प्यारा, सारे जगत का सरजन हारा॥
सूर्य में हो कर: जगत तपाऊँ, इन्द्र रूप में: वर्षा वर्षाऊँ।
वेदों में ओंकार प्यारा, सब सृष्टि का नाम अधारा॥
जो जन मेरी शरण में आवे: कोई कष्ट वह फिर नहीं पावे।
मैं सूर्य में प्रकाश हूँ, चाँद में शीतल जोय।
जो मेरी भक्ति करे, अजर अमर वह होय॥
भक्ति करे जो प्रेम से, मुझ में राखे चित्त।
सुखिया उसको मैं करूँ, जो ध्यावे मुझको नित्त॥
पात फूल फल जल सभी, जो देवे: कर प्रीति।
उस पर मैं प्रसन्न हूँ: जो पाले प्रेम की रीति॥
खावे जो कुछ हवन सम, तप और दान करे।
मेरे अर्पण करे सभी, वह फल कर्म न देवे॥

शूद्र स्त्री वैश्य भी, उत्तम पदवी पाएँ।
राजऋषि जो भक्त हैं: वे क्यों नरक में जाएँ॥
मुझको सिमिरे प्रेम से, मुझमें चित्त लगाएँ।
मुझको ध्यावे: समर्पण द्वारा, निश्चय मुक्ति पाएँ॥

-प्रस्तुति : अनु जैन (भिवानी)

आध्यात्मिक विकास

📖 डॉ० त्रिभुवन भारद्वाज

परमात्मा अव्यक्त चेतन तत्व का असीम सागर है। यह चेतन तत्व: अर्थात् सृष्टि के सूक्ष्मतम कण में भी विद्यमान है। इन सूक्ष्मतम कणों की चेतना शक्ति से पूरे ब्रह्माण्ड की: असीम सीमा तक रचना होती रहती है। इसे साईंस में Conversion of energy into matter कहते हैं।

जैसे वृक्ष की जड़ें: जमीन, खाद, पानी से पेड़ का जीवन रस लेती हैं और पूरे पेड़ को हरा-भरा कर देती हैं, ठीक उसी प्रकार सूक्ष्मतम क्षेत्र की असीम चेतना शक्ति: पूरे ब्रह्माण्ड रूपी पेड़ को हरा-भरा करती है।

परमात्मा अद्वैत जगत में निर्गुण, निराकार: अर्थात् न बदलने वाला (Absolute) शक्ति का सागर है। परमात्मा द्वैत जगत (Relative field) में अनन्त योनियों द्वारा प्रकट होकर निर्गुण निराकार से सगुण साकार रूप धारण करता है। जब यह परमात्मा रूपी चेतन शक्ति जीव का रूप धारण करती है: तो सगुण साकार सृष्टि की उत्पत्ति होती है।

मनुष्य के पास ईश्वर स्वरूप बनने के लिए सबसे उच्च कोटि का मन है। मनुष्य को परमात्मा ने एक स्वतंत्र इच्छा एवं सक्षम बुद्धि प्रदान की है। इस द्वारा मनुष्य जितनी चाहे, उतनी चेतना शक्ति अपने मन में पिरोकर अपना मन-चाहा उत्थान कर सकता है। रामायण के अनुसार:-

बड़े भाग मनुज तन पावा।

सुर दुर्लभ सब ग्रन्थहिं गावा ॥

‘स्व’ की अनुभूति ही अध्यात्म



📖 महर्षि महेश योगी

यह ‘स्व’ (जीवात्मा) ही परमात्मा का अंश है। यही जीव का स्वरूप है: शुद्ध स्वास्थ्यमय, शक्तिमय, आनन्दमय, ज्ञानमय और प्रेममय। इसी की अनुभूति प्राप्त करना अथवा इसी का प्राकट्य होना ही **आध्यात्मिक विकास** है। स्पष्ट है कि स्वरूप अंदर स्थित है। पर ढका हुआ है: मल, आसक्ति, अहंकार और मिथ्या अपनत्व के विकारों से। ये विकार अपने शरीर, इन्द्रियां, मन, बुद्धि और अहं में हैं। अध्यात्म मार्ग पर निरंतर गति हेतु साधक को ध्यान साधना द्वारा इन विकारों को निकालना है।

कितना ही अशान्त मनुष्य क्यों ना हो ? इस ध्यान साधना के आरम्भ से ही उसे हल्कापन अनुभव होने लगता है। 5 मिनट में ही यह अनुभव होने लगता है कि यह कितना अच्छा है ! हमने यह नहीं सोचा था: कि यह अनुभव इतना शीघ्र हो जायेगा। बस एक कदम भीतर की ओर बढ़ें: कि आकर्षण बढ़ने लगता है। बढ़ता हुआ आकर्षण: तनाव दूर कर देता है। संसार के सारे तनाव इसीलिये हैं: कि हम जो चाहते हैं, उसे पाने में असमर्थ हैं। हमें यह चाहिए, हमें वह चाहिए: पर उसे पाने में हम सामर्थ्य नहीं हैं।

आन्तरिक वैभव की ओर मन एक कदम बढ़ा और निश्चित रूप से अधिक आनन्द का अनुभव हुआ। आनन्द का यह अनुभव: अभी तक की समस्त अतृप्त इच्छाओं की पूर्ति के समान है। तुरन्त ही तनाव दूर हो जाते हैं। सभी अनिद्रा आदि, सभी चिन्ताजनित मनोवैज्ञानिक रोग समाप्त हो जाते हैं। उनका कारण ही नष्ट हो जाता है।

यह वर्तमान संसार के लिये अत्यन्त विलक्षण वरदान है। एकदम स्वचलित है। हम लोग स्वचलित युग के वासी हैं। □

सत्संग का महत्व

श्री कुबेर प्रसाद ‘गुप्त कबीर’

बहु वासना मसक हिमरासिहि।
सदा एक रस अज अतिनासिहि॥

जिस प्रकार बर्फ के पास मच्छर नहीं रह पाते, उससे दूर चले जाते हैं: उसी प्रकार उस, अजन्मा और अविनाशी ब्रह्म (सत्) के पास जो भी बैठेगा, सत्संग करेगा: उसकी सभी वासनाएं अपने आप छूट जायेंगी। वास्तविकता तो यह है: कि जिसको भी छोड़ने का प्रयास किया जाता है, वह और अधिक दृढ़ता से चिपक जाता है। हाँ, कभी-कभी कुछ निर्बल होकर वह और अन्दर जाकर छिप जाता है: जहाँ बाद में वह पहले से भी अधिक सबल हो जाता है-

विषया विनिवर्तन्ते, निराहस्य देहिनः।
रस वर्ज्यं रसोऽप्यस्य, परं द्रष्ट्वा निवर्तते॥

जाने ते छीजहिं कछु पापी। नास न पावहिं जन परितापी॥

विषय कुपथ्य पाइ अंकुरे। मुनिहु हृदय का नर बापुरे॥

ऊपर की चौपाइयों का तातपर्य एक ही है: विषयों का संयम करने से और उनका हानिकर प्रभाव जान लेने से, विषयों का बल कम हो जाता है। कभी-कभी उनका बाह्यरूप भी छिप जाता है, और अनुकूल अवसर पाकर वे दुगने वेग से हावी हो जाते हैं। उनका बीज तो ब्रह्म (परंद्रष्टवा) के दर्शन, साक्षात्कार से ही नष्ट होता है और उनसे सदा के लिये मुक्ति मिल जाती है। ब्रह्म का दर्शन: साक्षात्कार ही सत्संग है। गोस्वामी जी ने कहा है:-

बड़े भाग पाइअ सतसंगा। बिनहि प्रयास होहिं भव भंगा॥

जो सत्संग करते हैं, वे भाग्यशाली हैं: क्योंकि सत्संग से संसार के कष्टों

का अन्त हो जाता है। सत्संग का महत्व बताने के लिए गोस्वामी जी कहते हैं :-

तात् स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिअ तुला इक अंग।

तूल न ताहि सकल मिली, जो सुख लव सत्संग॥

साधारण मनुष्य जीवन को सुखी बनाने के लिए सत्कर्म (तीर्थाटन, जप, तप, दान) करते हैं, परन्तु इनसे अधिक-से-अधिक उन्हें इस लोक में अल्पजीवी और अन्त में दुःखद परिणाम ही मिलते हैं। यहाँ तक कि ऐसे कर्मों से स्वर्ग की भी प्राप्ति हो सकती है: पर ‘स्वर्गउ स्वप्न अन्त दुखदायी’ है। इसके अतिरिक्त कुछ लोग इन अल्पजीवी और अन्त में दुःखदायी बाह्य सुखों को छोड़कर: मोक्ष पाने की आकांक्षा से जप, यज्ञ, दान, तपश्चर्या इत्यादि करते हैं। परन्तु गोस्वामी जी का कहना है: कि स्वर्ग और मोक्ष के सुखों को यदि तराजू के एक पलड़े पर रख दिया जाय और दूसरे पलड़े पर निमिष (क्षण) मात्र अवधि के सत्संग के फल को रख दिया जाये, तो सत्संग वाला पलड़ा भारी होगा। इसलिए मानस में उन्होंने लिखा है :-

धन्य धरी सोइ जब सत्संगा।

कुछ लोग संशय रहित होने के लिए धारणा की भ्रान्ति दूर करने की साधनाएं बताते हैं और पार्वती जी की साधना का विवरण देकर खोज के एक पृथक् मार्ग (साधना) का समर्थन करते हैं। इसे वे जानने का मार्ग कहते हैं, किन्तु इस सम्बन्ध में गोस्वामी जी का मत भिन्न है-

भवानी शंकरौ बंदे श्रद्धा विश्वास रूपिणौ।

याभ्यां बिना न पश्यन्ति॥

भवानी (पार्वती) को खोज द्वारा जानने की साधना और शंकर को विश्वास (मानने) के दो रास्ते नहीं हैं: यह ‘याभ्यां’ शब्द से स्पष्ट हो जाता है। यही नहीं मानस में गोस्वामी जी ने एक जगह इसे और भी स्पष्ट शब्दों में लिखा है:

‘जाने बिनु न होइ परतीती।’

उस अविनाशी ब्रह्म को जान लेने पर ही उस पर विश्वास होता है। जानकर ही माना जाता है। केवल मानकर कोई साधना सफल नहीं होगी। ऐसा गोस्वामी जी का मत मालूम होता है। संस्कृत में एक सुभाषित है :-

सत्यं तपो जपो ज्ञानं सर्वा विद्या कला अपि।

नरस्य निष्फला सन्ति यस्य शीलं न विद्यते।

सच्चरित्र होने और शीलवान् होने में जमीन आसमान का अन्तर है:- चरित्र बाहर से अपनाये गए आचरण को कहते हैं और भिन्न-भिन्न मतावलम्बियों के आचरण भिन्न-भिन्न होते हैं। लेकिन शील: अन्दर के बदलाव के बाद जो बाह्य आचरण स्वभावतः उत्पन्न होता है, उसे शील कहते हैं। यह सभी सिद्धों, संतों में समान होता है। जिस शील के बिना सत्य, तप, जप, (बाह्य पुस्तकीय) ज्ञान: यहाँ तक कि सभी विद्याएँ और कलाएँ निष्फल हो जाती हैं: वह शील भी सत्संग करने वाले के जीवन में ही प्रस्फुटित होता है। इसलिए किसी भी कीमत पर ध्यान (उप+आसन=उपासना) पर बैठने का समय निकालना और सत्संग (सत् के संग) की ऊँचाइयों को उपलब्ध करना ही श्रेयष्कर है।

राम (ब्रह्म) की दया (कृपा) तो सर्वदा सर्वत्र बरसती रहती है। पर वह हम तक तभी पहुँचेगी (हमें तभी मिलेगी: जब हम माया के क्षेत्र से पार भावातीत क्षेत्र में जाकर ब्रह्म (राम) के सम्पर्क में आवेंगे, अर्थात् सत्संग करेंगे। इस सत्संग से ब्रह्म के सत्-चित्-आनन्द के जो गुण मन को प्राप्त होंगे: उनसे क्रोध, काम, लोभ, मद सभी स्वतः छूट जायेंगे। गोस्वामी जी कहते हैं :-

क्रोध मनोज, लोभ मद माया।

छूटहिं सकल राम की दाया ॥

नोट :- 1. प्रत्येक रविवार को बुधला सन्त मन्दिर नज़दीक बस स्टैण्ड, हिसार में पारिवारिक सत्संग शाम को 5 बजे से 7 बजे तक होता है। आप सभी सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

2. ध्यान सम्बन्धी अपने अनुभव, लेख, आलोचना (Comments), अनुभूतियाँ, प्रश्नोत्तर, शंका-समाधान इत्यादि इस पते पर भेज सकते हैं :-

-सुरेश कुमार गुप्ता

1618, अर्बन एस्टेट-II,

पुष्पा कम्पलैक्स के पीछे, हिसार-125005

ध्यान शिविर-2011 : प्रेरक-डॉ० रामभू नाथ जी

10, 11, एवं 12 सितम्बर (शनिवार, रविवार एवं सोमवार)

आप सभी सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

पंजाबी धर्मशाला, राजगुरु मार्केट (आर्य बाजार), हिसार 9466747600

सत्य नारायण शर्मा (9416164702), गंगाधर बंसल (9255967600)

पंकज सुपुत्र डॉ० बलदेव राज नाशा (9255172880)

ध्यान सत्संग सभा, हिसार (हरियाणा)

PRINTED MATTER